Isa-Upanisad

Start with prayer, these two mantras

Chanting first 10 mantras together

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै ।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

सह - together नौ – us अवतु - protect सह – together नौ – us, भुनक्तु – nourish, सह - together वीर्यं – energetic करवावहै - make तेजस्वि – vigorous नौ - us अवधीतम -what we have studied अस्तु - may be मा – not विद्विषावहै - quarrel with each other शान्तिः शान्तिः शान्तिः - Om Peace Peace Peace.

We pray to God: May He protect us both (teacher and student), May He nourish us with Knowledge, May we acquire energy and become enlightened by this study, May we not quarrel over anything and become inimical Om Peace ! Peace ! Peace !

हम दोनों (गुरू व शिष्य) सुरक्षित हों, हम दोनों एक साथ ही इस ज्ञान का भोग करें,
यह ज्ञानमीमांसा दोनों को सामर्थ्य देने वाला हो, हमारा अध्ययन किया ज्ञान हमें श्रेय व यश देने वाला हो।
हम कभी द्वेष न करें।

भुनक्तु भुज् - भुनक्तौ to eat, to devour, consume **भरण-पोषण, भोग करना, उपयोग करना।**

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Om, That (Outer World) is Purna (Full with Divine Consciousness); This (Inner World) is also Purna (Full with Divine Consciousness); From Purna is manifested Purna (From the Fullness of Divine Consciousness the World is manifested), Taking Purna from Purna, Purna indeed remains (Because Divine Consciousness is Non-Dual and Infinite).

That is Whole/complete and this is Whole/complete, the perfect has come out of the perfect; having taken the perfect from the perfect, only the perfect remains. Let there be Peace, Peace, Peace.

Isa-Upanisad

ईशा वास्यम् इदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥ १ ॥

īśā vāsyam idaṃ sarvaṃ yat kiñca jagatyāṃ jagat |
tena tyaktena bhuñjīthā mā gṛdhaḥ kasya sviddhanam || 1 ||

ईशा। वास्यम्। इदम्। सर्वम्। यत्। किम्। च। जगत्याम्। जगत्॥
तेन। त्यक्तेन। भुञ्जीथाः। मा। गृधः। कस्य। स्वित्। धनम्

īśa—by the Lord; āvāsyam—controlled; idam—this; sarvam—all; yat kiñca—whatever; jagatyām—within the universe; jagat—all that is animate or inanimate; tena—by Him; tyaktena—set-apart quota; bhuñjīthāḥ—you should accept; mā—do not; gṛdhaḥ—endeavor to gain; kasya-svit—of anyone else; dhanam—the wealth.

जगत्याम् - jagatyām - in the universal motion | यत् किम् च - yat kim ca - whatsoever | जगत् - jagat - individual universe of movement | अस्ति - (asti) - is | इदम् - idam - this | सर्वम् - sarvam - all | ईशा - īśā - by the Lord | वास्यम् - vāsyam - for habitation | तेन - tena - by that | त्यक्तेन - tyaktena - renounced | भूञ्जीथाः - bhūJñīthāḥ - thou shouldst enjoy कस्यस्वित् - kasyasvit - any man's धनम् - dhana - possession | मा गृधः - mā gṛdhaḥ - lust not after |

S. RadhaKrishna:

(Know that) all this, whatever moves in this moving world, is enveloped by God. Therefore, find your enjoyment in renunciation; do not covet what belongs to others.

Sankara:

In the Lord is to be veiled all this—whatsoever moves on earth. Through such renunciation do thou save (thyself); be not greedy, for whose is wealth?

Hindi Meaning:

इस वैश्व गति में, इस अत्यन्त गतिशील समष्टि-जगत् में जो भी यह दृश्यमान गतिशील, वैयक्तिक जगत् है-यह सबका सब ईश्वर के आवास के लिए है। इस सबके त्याग द्वारा तुझे इसका उपभोग करना चाहिये; किसी भी दूसरे की धन-सम्पत्ति पर ललचाई दृष्टि मत डाल।

(यत्) जो (इदम्) प्रकृति से लेकर पृथिवीपर्य्यन्त (सर्वम्) सब (जगत्याम्) प्राप्त होने योग्य सृष्टि में (जगत्) चरप्राणीमात्र (ईशा) संपूर्ण ऐश्वर्य से युक्त सर्वशक्तिमान् परमात्मा से (वास्यम्) आच्छादन करने योग्य अर्थात् सब ओर से व्याप्त होने योग्य है (तेन) उस (त्यक्तेन) त्याग किये हुए जगत् से (भुञ्जीथाः) पदार्थों के भोगने का अनुभव कर (किंच) किन्तु (कस्य, स्वित्) किसी के भी (धनम्) वस्तुमात्र की (मा) मत (गृधः) अभिलाषा कर ॥

Note: ईशा - īśā Ruler, Lord, master, govern, command, supreme, Powerful, ईशा, ईष्टे इति ईट्, ईशिता परमेश्वरः परमात्मा, स खलु सर्वस्य ईष्टे तेन ईशा, गच्छति इति जगत. इषिरेण मनसा, एषणेन मनसा, अर्षणेन मनसा। सर्वात्मना, फलयुक्त, दर्शनार्थी मन से।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ २ ॥

kurvann eveha karmāṇi jijīviṣecchataṃ samāḥ |
evaṃ tvayi nānyatheto'sti na karma lipyate nare || 2 ||
कुर्वन्। एव। इह। कर्माणि। जिजीविषेत्। शतम्। समाः ॥
एवम्। त्वयि। न। अन्यथा। इतः। अस्ति। न। कर्म। लिप्यते। नरे

kurvan—doing continuously; eva—thus; iha—during this span of life; karmāṇi—work; jijīviṣet—one should desire to live; śatam—one hundred; samāḥ—years; evam—so living; tvayi—unto you; na—no; anyathā—alternative; itaḥ—from this path; asti—there is; na—not; karma—work; lipyate—can be bound; nare—unto a man.

इह - iha - in this world | कर्माणि - karmāṇi - works | कुर्वन् - kurvan - doing | एव - eva - verily | शतम् - śatam - hundred | समाः - samāḥ - years | जिजीविषेत् - jijīviṣet - one should wish to live | एवम् - evam - thus | त्वयि - tvayi - in thee | नरे - nare - to a man | इतः - itaḥ - than this | न - na - not | अन्यथा - anyathā - otherwise | अस्ति - asti - it is | कर्म - karma - action | न लिप्यते - na lipyate - cleaves not |

S. Radhakrishna
Always performing works here one should wish to live a hundred years. If you live thus as a man, there is no way other than this by which karman (or deed) does not adhere to you.

Sankara:
Always performing *karma* here, one should desire to live, for a hundred years. So long as thou (seekest to live) a mere man, no other (path) exists (where) activity does not taint thee.

Hindi Meaning:
इस संसार में कर्म करते हुए ही मनुष्य को सौ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिये। हे मानव! तेरे लिए इस प्रकार का ही विधान है, इससे भिन्न किसी और प्रकार का नहीं है, इस प्रकार कर्म करते हुए ही जीने की इच्छा करने से मनुष्य में कर्म का लेप नहीं होता।

Note:

जिजीविषा	जीने की इच्छा
लिप्यते	लीपना

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।

तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥ ३ ॥

asuryā nāma te lokā andhena tamasāvṛtāḥ |
tāṃste pretyābhigacchanti ye ke cātmahano janāḥ || 3 ||
असुर्य्याः। नाम। ते। लोकाः। अन्धेन। तमसा। आवृता इत्याऽवृताः ॥
तान्। ते। प्रेत्येति प्रऽइत्य। अपि। गच्छन्ति। ये। के। च। आत्महन इत्यात्मऽहनः। जनाः ॥

asuryāḥ—meant for the asuras; nāma—famous by the name; te—those; lokāḥ—planets; andhena—by ignorance; tamasā—by darkness; āvṛtāḥ—covered; tān—those planets; te—they; pretya—after death; abhigacchanti—enter into; ye—anyone; ke—everyone; ca—and; ātma-hanaḥ—the killers of the soul; janāḥ—persons.

असूर्याः - asuryāḥ - sunless | अन्धेन - andhena - blind | तमसा - tamasā - gloom | आवृताः - āvṛtāḥ - enveloped in | नाम - nāma - indeed | ते - te - those | लोकाः - lokāḥ - worlds | ये के - ye ke - they who | च - ca - and | जनाः - janāḥ - people | आत्महनः - ātmahanaḥ - slayers of their souls | ते - te - they | प्रेत्य - pretya - having passed / in their passing | तान् - tān - those worlds | अभिगछति - abhigachati - resort to |

S. Radhakrishna:

Demoniac, verily, are those worlds enveloped in blinding darkness, and to them go after death, those people who are the slayers of the self.

Sankara:

Malignant are those worlds and enveloped in blinding darkness, into which pass, after death, whatsoever people slay the Self.

Hindi Meaning:

वे लोक सूर्य से रहित हैं और गाढ़े अन्धकार से आच्छादित हैं। उन लोकों को वे सभी लोग यहां से प्रयाण करने पर पहुंचते हैं जो कोई भी अपनी आत्मा का हनन करते हैं।

(लोकाः) देखनेवाले लोग (अन्धेन) अन्धकाररूप (तमसा) ज्ञान का आवरण करनेहारे अज्ञान से (आवृताः) सब ओर से ढँपे हुए (च) और (ये) जो (के) कोई (आत्महनः) आत्मा के विरुद्ध आचरण करनेहारे (जनाः) मनुष्य हैं (ते) वे (असुर्य्याः) अपने प्राणपोषण में तत्पर अविद्यादि दोषयुक्त लोगों के सम्बन्ध, उनके पापकर्म करनेवाले प्रसिद्ध होते हैं (ते) वे (प्रेत्य) मरने के पीछे (अपि) और जीते हुए भी (तान्) उन दुःख और अज्ञानरूप अन्धकार से युक्त भोगों को (गच्छन्ति) प्राप्त होते हैं ॥

आ + वृताः (आ) वर्तना, होना

प्रेत्य प्र + एत्य

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्षत् ।

तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति ॥ ४ ॥

anejad ekaṃ manaso javīyo nainaddevā āpnuvanpūrvamarṣat |
taddhāvato'nyānatyeti tiṣṭhat tasminn apo mātariśvā dadhāti || 4 ||
अनेजत्। एकम्। मनसः। जवीयः। न। एनत्। देवाः। आप्नुवन्। पूर्वम्। अर्षत् ॥
तत्। धावतः। अन्यान्। अति। एति। तिष्ठत्। तस्मिन्। अपः। मातरिश्वा। दधाति ॥

anejat—fixed; ekam—one; manasaḥ—than the mind; javīyaḥ—more swift; na—not; enat—this Supreme Lord; devāḥ—the demigods like Indra, etc.; āpnuvan—can approach; pūrvam—in front; arṣat—moving quickly; tat—He; dhāvataḥ—those who are running; anyān—others; atyeti—surpasses; tiṣṭhat—remaining in one place; tasmin—in Him; apaḥ—rain; mātariśvā—the gods who control the wind and rain; dadhāti—supply.

तत् - (tat) - That | एकम् - ekam - one | अनेजत् - anejat - unmoving | मनसः - manasaḥ - than Mind | जवीयः - javīyaḥ - swifter | यस्मात् - yasmāt - for | पूर्वम् - pūrvam - ever in front | अर्षत् - arṣat - progresses | देवाः - devāḥ - Gods | एनत् - enat - It | न - na - not | आप्नुवन् - āpnuvan - reach | तत् - tat - That | तिष्ठत् - tiṣṭhat - standing | धावतः - dhāvataḥ - as they run | अन्यान् - anyān - others | अत्येति - atyeti - passes beyond | तस्मिन् - tasmin - in That | मातरिश्वा - mātariśvā – wind, the Master of Life | अपः - apaḥ - the Waters | दधाति - dadhāti - establishes |

S. Radhakrishna:
(The spirit) is unmoving, one, swifter than the mind. The senses do not reach It as It is ever ahead of them. Though Itself standing still It outstrips those who run. In It the au pervading air supports the activities of beings.

Sankara:
Unmoving, one, (and speedier than the mind; the senses reach it never; (for) it (Self) goes before. Standing, it outstrips others that run. In virtue of it, does *mātarisvā* allot functions (severally to all).

Hindi Meaning:
वह अचल, अचलायमान एकमेव ब्रह्म मन से वेगवत्तर, अत्यधिक वेगवाला है। उस एकमेव तक देवता नहीं पहुँच पाते, क्योंकि वह सदैव उनसे आगे-आगे पहुँच जाता है, पहुँचा होता है। वह ठहरा हुआ भी दौड़ते हुए दूसरों को पार कर आगे निकल जाता है। उस तत् में जीवन-शक्ति का स्वामी वायु जलधाराओं को स्थापित करता है।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।

तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥ ५ ॥

tad ejati tan naijati tad dūre tad v antike |
tad antar asya sarvasya tad u sarvasyāsya bāhyataḥ || 5 ||
तत्। एजति। तत्। न। एजति। तत्। दूरे। तत्। ऊँऽइत्यूँ। अन्तिके ॥
तत्। अन्तः। अस्य। सर्वस्य। तत्। ऊँऽइत्यूँ। सर्वस्य। अस्य। बाह्यतः ॥

tat—this Supreme Lord; ejati—walks; tat—He; na—not; ejati—walks; tat—He; dūre—far away; tat—He; u—also; antike—very near; tat—He; antaḥ—within; asya—of this; sarvasya—of all; tat—He; u—also; sarvasya—of all; asya—of this; bāhyataḥ—external to.

तत् - tat - That | एजति - ejati - moves | तत् - tat - That | न एजति - na ejati - moves not | तत् - tat - That | दूरे - dūre - is far | तत् - tat - That | उ - u - also | अन्तिके - antike - is near | एतत् - etat - That | अस्य सर्वस्य - asya sarvasya – all this | अन्तः - antaḥ - within | तत् - tat - That | उ - u - also | सर्वस्य अस्य - sarvasya asya - all this | बाह्यतः - bāhyataḥ - outside|

S. Radhakrishna:
It moves and It moves not; It is far and It is near; It is within all this and It is also outside all this.

Sankara:
It moves: and it moves not; it is far and it is near. It is inside all this; it is also outside all this.

Hindi Meaning:
वह गति करता है और गति नहीं भी करता; वह दूर है और पास भी है; इस सबके भीतर है और इस सबके बाहर भी है।

वह ब्रह्म (एजति) अज्ञानी की दृष्टि से चलायमान होता (तत्) (न, एजति) अपने स्वरूप से न चलायमान और न चलाया जाता (तत्) वह (दूरे) अविद्वान् अयोगियों से दूर अर्थात् क्रोड़ों वर्ष में भी नहीं प्राप्त होता (तत्) वह (उ) ही (अन्तिके) धर्मात्मा विद्वान् योगियों के समीप (तत्) वह (अस्य) इस (सर्वस्य) सब जगत् वा जीवों के (अन्तः) भीतर (उ) और (तत्) वह (अस्य, सर्वस्य) इस प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षरूप के (बाह्यतः) बाहर भी वर्त्तमान है ॥

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति ।

सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते ॥ ६ ॥

yas tu sarvāṇi bhūtāny ātmany evānupaśyati |
sarvabhūteṣu cātmānaṃ tato na vijugupsate || 6 ||
यः। तु। सर्वाणि। भूतानि। आत्मन्। एव। अनुपश्यतीत्यनुऽपश्यति ॥
सर्वभूतेष्विति सर्वऽभूतेषु। च। आत्मानम्। ततः। न। वि। चिकित्सति ॥

yaḥ—he who; tu—but; sarvāṇi—all; bhūtāni—living entities; ātmani—in relation to the Supreme Lord; eva—only; anupaśyati—observes in a systematic way; sarva-bhūteṣu—in every living being; ca—and; ātmānam—the Supersoul; tataḥ—thereafter; na—not; vijugupsate—hates anyone.

यः - yaḥ - he who | तु - tu - indeed | सर्वाणि भूतानि - sarvāṇi bhūtāni - all existences | आत्मनि - ātmani - in the Self | एव - eva - surely | अनुपश्यति - anupaśyati - sees | सर्वभूतेषु - sarvabhūteṣu - in all existences | च - ca - and | आत्मानम् - ātmāna - the Self | ततः - tataḥ - thereafter from aught | न विजुगुप्सते - na vijugupsate - shrinks not |

S. Radhakrishna:
And he who sees all beings in his own self and his own self in all beings, he does not feel any revulsion by reason of such a view.

Sankara:
And he who sees all beings in himself and himself in all beings has no aversion thence.

Hindi Meaning:
परन्तु जो सभी भूतों या सत्ताओं को परम-आत्मा में ही देखता है और सभी भूतों या सत्ताओं में परम-आत्मा को, वह फिर सर्वत्र एक ही आत्मा के प्रत्यक्ष दर्शन के पश्चात्, किसी से कतराता नहीं, घृणा नहीं करता।

(यः) जो विद्वान् जन (आत्मन्) परमात्मा के भीतर (एव) ही (सर्वाणि) सब (भूतानि) प्राणी-अप्राणियों को (अनुपश्यति) विद्या और ध्यानदृष्टि से देखता है (तु) और जो (सर्वभूतेषु) सब प्रकृत्यादि पदार्थों में (आत्मानम्) आत्मा को (च) भी देखता है, वह विद्वान् (ततः) तिस पीछे (न) नहीं (वि चिकित्सति) संशय को प्राप्त होता ॥

भूतानि	whatever is born, the all live creatures	प्राणि
विजुगुप्सते	पाप करना, घृणा करना	
अनुपश्यति	गहराई से अन्दर देखना	

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ।

तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ॥ ७ ॥

yasmin sarvāṇi bhūtāny ātmaivābhūd vijānataḥ |
tatra ko mohaḥ kaḥ śoka ekatvam anupaśyataḥ || 7 ||
यस्मिंन्। सर्वाणि। भूतानिं। आत्मा। एव। अभूंत्। विजानत इतिं विऽजानतः ॥
तत्रं। कः। मोहः। कः। शोकः। एकत्वमित्येकऽत्वम्। अनुपश्यंतऽइत्यनुपश्यंतः ॥

yasmin—in the situation; sarvāṇi—all; bhūtāni—living entities; ātmā—the cit-kaṇa, or spiritual spark; eva—only; abhūt—exist as; vijānataḥ—of one who knows; tatra—therein; kaḥ—what; mohaḥ—illusion; kaḥ—what; śokaḥ—anxiety; ekatvam—oneness in quality; anupaśyataḥ—of one who sees through authority, or one who sees constantly like that.

यस्मिन् - yasmin - in whom | आत्मा - ātmā - the Self - Being | एव - eva - indeed | सर्वाणि भूतानि - sarvāṇi bhūtāni - all existences that are Becomings | अभूत् - abhūt - has become | विजानतः - vijānataḥ - of him who has the perfect knowledge | एकत्वम् अनुपश्यतः - ekatvam anupaśyataḥ - of him who sees everywhere oneness | तत्र - tatra - there | कः मोहः - kaḥ mohaḥ - how shall be delusion | कः शोकः - kaḥ śokaḥ - shall be grief |

S. Radhakrishna:
When, to one who knows, all beings have, verily, become one with his own self, then what delusion and what sorrow can be to him who has seen the oneness?

Sankara:
When to a knower discovering unity, all beings become his very Self, what delusion then (to him) and what sorrow?

Hindi Meaning:
पूर्ण ज्ञान, विज्ञान से सम्पन्न होने के कारण जिस मनुष्य के अन्दर यह परमोच्च चेतना जाग गयी है कि स्वयम्भू आत्मसत्ता ही, परम आत्मा ही स्वयं सभी भूत, सभी सत्ताएं या सम्भूतियां बना है, उस मनुष्य में फिर मोह कैसे होगा, शोक कहां से होगा जो सर्वत्र आत्मा की एकता ही देखता है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धम् अपापविद्धम् ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥ ८ ॥

sa paryagāc chukram akāyam avraṇam asnāviraṃ śuddham apāpaviddham |
kavir manīṣī paribhūḥ syayambhūr yāthātathyator'thān vyadadhāc chāśvatībhyaḥ samābhyaḥ ||

सः। परि॑। अ॒गा॒त्। शु॒क्रम्। अ॒का॒यम्। अ॒व्र॒णम्। अ॒स्ना॒वि॒रम्। शु॒द्धम्। अपा॑पविद्ध॒मित्यपा॑पऽविद्धम् ॥
क॒विः। म॒नी॒षी। प॒रि॒भूरिति॑ परि॒ऽभूः। स्व॒य॒म्भूरिति॑ स्वय॒म्ऽभूः। या॒थात॒थ्य॒त इति॑ याथाऽत॒थ्य॒तः।
अर्था॑न्। वि। अ॒द॒धा॒त्। शा॒श्व॒तीभ्य॑ः। समा॑भ्यः ॥

saḥ—that (supreme); paryagāt—must know in fact; śukram—the omnipotent; akāyam—unembodied; avraṇam—without reproach; asnāviram—without veins; śuddham—antiseptic; apāpa-viddham—prophylactic; kaviḥ—omniscient; manīṣī—philosopher; paribhūḥ—the greatest of all; svayambhūḥ—self-sufficient; yāthātathyataḥ—just in pursuance of; arthān—desirables; vyadadhāt—awards; śāśvatībhyaḥ—immemorial; samābhyaḥ—time.

सः - saḥ - It is He | पर्यगात् - paryagāt - has gone abroad | शुक्रम् - śukram - bright | अकायम् - akāyam - bodiless | अव्रणम् - avraṇam - without scar of imperfection | अस्नाविरम् - asnāviram – without sinews | शुद्धम् - śuddham - pure | अपापविद्धम् - apāpaviddham - unpierced by evil | कविः - kaviḥ - the Seer | मनीषी - manīṣī - the Thinker | परिभूः - paribhuḥ - the One who becomes everywhere | स्वयम्भुः - svayambhuḥ - the Self - existent | शाश्वतीभ्यः समाभ्यः - śāśvatībhyaḥ samābhyaḥ - from years sempiternal. | सः - saḥ - He | याथातथ्यतः - yāthātathyataḥ - perfectly according to nature or truth | अर्थान् - arthān - objects | व्यदधात् - vyadadhāt - has ordered |

S. Radhakrishna:
He has filled all; He is radiant, bodiless, invulnerable, devoid of sinews, pure, untouched by evil. He, the seer, thinker, all-pervading, self-existent has duly distributed through endless years the objects according to their natures.

Sankara:
He (the self) is all pervading, bright, incorporeal, scatheless and veinless, pure, untouched by sin; a seer, all-knowing, superposed and self-begotten. (It is He that) has duly allotted to the eternal creators their (various) duties.

Hindi Meaning:
वह पुरुष ही सर्वत्र व्याप्त है-वह तत् जो ज्योतिर्मय, शरीर-रहित, अपूर्णता के चिह्न या दाग से शून्य, स्नायु एवं नस-नाड़ी से रहित और शुद्ध है एवं पाप से बिधा नहीं है। सर्वदर्शी, मनीषवान् वह एकमेव जो सर्वत्र सब कुछ हो जाता या बन जाता है, उस स्वयंसत् पुरुष ने ही सनातन वर्षों से, अनादि काल से सभी पदार्थों को उनके स्वभाव के अनुरूप पूर्णतया ठीक-ठीक, यथातथ रूप में व्यवस्थित कर रखा है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते ।

ततो भूय इव ते तमोय उ विद्यायां रताः ॥ ९ ॥

andhaṃ tamaḥ praviśanti ye'vidyām upāsate |
tato bhūya iva te tamo ya uvidyāyāṃ ratāḥ || 9 ||
अन्धम्। तमः। प्र। विशन्ति। ये। अविद्याम्। उपासत इत्युपऽआसते ॥
ततः। भूयऽइवेति भूयःऽइव। ते। तमः। ये। ऊँऽइत्यूँ। विद्यायाम्। रताः ॥

andham—gross ignorance; tamaḥ—darkness; praviśanti—enter into; ye—those who; avidyām—nescience; upāsate—worship; tataḥ—than that; bhūyaḥ—still more; iva—like; te—they; tamaḥ—darkness; ye—those who; u—also; vidyāyām—in the culture of knowledge; ratāḥ—engaged.

ये - ye - they who | अविद्याम् - avidyām - the Ignorance | उपासते - upāsate - follow after | ते - te - they | अन्धम् - andham - blind | तमः - tamaḥ - darkness | प्रविशन्ति - praviśanti - enter | ये - ye - they who | उ - u - on the other hand | विद्यायाम् - vidyāyām - in the Knowledge | रताः - ratāḥ - have attachment / devotion | ते - te - they | भूयः - bhūyaḥ - into a greater | तमः - tamaḥ - darkness | प्रविशन्ति - praviśanti - enter |

S. Radhakrishna:

Into blinding darkness enter those who worship ignorance and those who delight in knowledge enter into still greater darkness, as it were.

Sankara:

Into blinding darkness pass they who adhere to *karma* and into still greater darkness, as it were, they who delight in meditation.

Hindi Meaning:

जो अविद्या का अनुसरण करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। और जो केवल विद्या में ही रत रहते हैं वे मानों उससे भी अधिक घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

(ये) जो लोग (अविद्याम्) अनित्य में नित्य, अशुद्ध में शुद्ध, दुःख में सुख और अनात्मा शरीरादि में आत्मबुद्धिरूप अविद्या उसकी अर्थात् ज्ञानादि गुणरहित कारणरूप परमेश्वर से भिन्न जड़ वस्तु की (उपासते) उपासना करते हैं, वे (अन्धम्, तमः) दृष्टि के रोकनेवाले अन्धकार और अत्यन्त अज्ञान को (प्र, विशन्ति) प्राप्त होते हैं और (ये) जो अपने आत्मा को पण्डित माननेवाले (विद्यायाम्) शब्द, अर्थ और इनके सम्बन्ध के जानने मात्र अवैदिक आचरण में (रताः) रमण करते (ते) वे (उ) भी (ततः) उससे (भूय इव) अधिकतर (तमः) अज्ञानरूपी अन्धकार में प्रवेश करते हैं ॥

अन्यदेवाहुर्विद्ययाऽन्यदाहुरविद्यया ।

इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १० ॥

anyad evāhur vidyayān yad āhur avidyayā |
iti śuśruma dhīrāṇāṃ ye nas tad vicacakṣire || 10 ||
अन्यत्। एव। आहुः। विद्यायाः। अन्यत्। आहुः। अविद्यायाः ॥
इति। शुश्रुम। धीराणाम्। ये। नः। तत्। विचचक्षिरे इति विऽचचक्षिरे ॥

anyat—different; eva—certainly; āhuḥ—said; vid-yayā—by culture of knowledge; anyat—different; āhuḥ—said; avidyayā—by culture of nescience; iti—thus; śuśruma—I heard; dhīrāṇām—from the sober; ye—who; naḥ—to us; tat—that; vicacakṣire—explained.

विद्यया - vidyayā - by the Knowledge | अन्यत् - anyat - other | आहुः - āhuḥ - it is said | अविद्यया - avidyayā - by the Ignorance | अन्यत् - anyat - other | एव - eva – verily आहुः - āhuḥ - it is said | इति - iti - thus | धीराणाम् - dhīrāṇām - (from mouth of) the wise ones | शुश्रुम - śuśruma - we have been hearing | ये - ye - those who | नः - naḥ - to us | तत् - tat - That | विचचक्षिरे - vicacakṣire - revealed to understanding |

S. Radhakrishna:
Distinct, indeed, they say, is the result of knowledge and distinct, they say, is the result of ignorance. Thus have we heard from those wise who have explained to us these.

Sankara:
Distinct, they say, is (the fruit borne) by meditation and distinct again, they say, is (that borne) by *karma.* Thus have we heard from sages who taught us that.

Hindi Meaning:
विद्या से जो प्राप्त होता है वह दूसरा ही है, ऐसा ज्ञानी कहते हैं। अविद्या से जो प्राप्त होता है वह और ही है, ऐसा ज्ञानी कहते हैं। यह श्रुतिज्ञान हमने ज्ञानियों से प्राप्त किया है जिन्होंने हमारी बुद्धि के समक्ष उसको प्रकाशित किया।

(ये) जो विद्वान् लोग (नः) हमारे लिये (विचचक्षिरे) व्याख्यापूर्वक कहते (विद्यायाः) पूर्वोक्त विद्या का (अन्यत्) अन्य ही कार्य वा फल (आहुः) कहते (अविद्यायाः) पूर्व मन्त्र से प्रतिपादन की अविद्या का (अन्यत्, एव) अन्य फल (आहुः) कहते हैं (इति) इस प्रकार उन (धीराणाम्) आत्मज्ञानी विद्वानों से (तत्) उस वचन को हम लोग (शुश्रुम) सुने, जानें ॥

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह ।

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते ॥ ११ ॥

vidyāṃ cāvidyāṃ ca yas tad vedobhayaṃ saha |
avidyayā mṛtyuṃ tīrtvā vidyayāmṛtam aśnute || 11 ||
विद्याम्। च। अविद्याम्। च। यः। तत्। वेद। उभयम्। सह ॥
अविद्यया। मृत्युम्। तीर्त्वा। विद्ययाऽ। अमृतम्। अश्नुते ॥

vidyām—knowledge in fact; ca—and; avidyām—nescience; ca—and; yaḥ—a person who; tat—that; veda—knows; ubhayam—both; saha—simultaneously; avidyayā—by culture of nescience; mṛtyum—repeated death; tīrtvā—transcending; vidyayā—by culture of knowledge; amṛtam—deathlessness; aśnute—enjoys.

यः - yaḥ - he who | विद्याम् - vidyām - the Knowledge | च - ca - and | अविद्याम् - avidyām - the Ignorance | तत् - tat - That | उभयम् - ubhayam - as both | सह - saha - in one / together | वेद - veda - knows | अविद्यया - avidyayā - by the Ignorance | मृत्युं - mṛryum - death | तीर्त्वा - tīrtvā - crosses beyond | विद्यया - vidyayā - by the Knowledge | अमृतम् - amṛtam - Immortality | अश्नुते - aśnute - enjoys |

S. Radhakrishna:
Knowledge and ignorance, he who knows the two together crosses death through ignorance and attains life eternal through knowledge.

Sankara:
Whoever understands meditation and *karma* as going together, (he) overcoming death through *karma*, attains immortality through meditation.

Hindi Meaning:
जो तत् को इस रूप में जानता है कि वह एक साथ विद्या और अविद्या दोनों है, वह अविद्या से मृत्यु को पार कर विद्या से अमरता का आस्वादन करता है।

(यः) जो विद्वान् (विद्याम्) पूर्वोक्त विद्या (च) और उसके सम्बन्धी साधन-उपसाधनों (अविद्याम्) पूर्व कही अविद्या (च) और इसके उपयोगी साधनसमूह को और (तत्) उस ध्यानगम्य मर्म (उभयम्) इन दोनों को (सह) साथ ही (वेद) जानता है, वह (अविद्यया) शरीरादि जड़ पदार्थ समूह से किये पुरुषार्थ से (मृत्युम्) मरणदुःख के भय को (तीर्त्वा) उल्लङ्घ कर (विद्यया) आत्मा और शुद्ध अन्तःकरण के संयोग में जो धर्म उससे उत्पन्न हुए यथार्थ दर्शनरूप विद्या से (अमृतम्) नाशरहित अपने स्वरूप वा परमात्मा को (अश्नुते) प्राप्त होता है ॥

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिम् उपासते ।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ॥ १२ ॥

andhaṃ tamaḥ praviśanti ye'sambhūtim upāsate |
tato bhūya iva te tamo ya u sambhūtyāṃ ratāḥ || 12 ||

अन्धम्। तमः। प्र। विशन्ति। ये। असम्भूतिमित्यसम्ऽभूतिम्। उपासत इत्युपऽआसते ॥
ततः। भूयऽइवेति भूयःऽइव। ते। तमः। ये। ऊँऽइत्यूँ। सम्भूत्यामिति सम्ऽभूत्याम्। रताः ॥

ये असम्भूतिम् उपासते ते अन्धं तमः प्रविशन्ति। ये उ सम्भूत्या रताः ते ततः भूयः इव तमः प्रविशन्ति ॥

ये - ye - they who | असम्भूतिम् - asambhūtim - the Non - Birth | उपासते - upāsate - follow after | ते - te - they | अन्धम् - andham - blind | तमः - tamaḥ - darkness | प्रविशन्ति - praviśanti - enter | ये - ye - they who | उ - u - on the other hand | सम्भूत्या - sambhūtyā - in the Birth alone | रताः - ratāḥ - are engrossed | ते - te - they | ततः - tataḥ - than that | भूयः - bhūyaḥ - than that | इव - iva - as if | तमः - tamaḥ - darkness | प्रविशन्ति - praviśanti - enter |

S. Radhakrishna:
Into blinding darkness enter those who worship the unmanifest and into still greater darkness, as it were, those who delight in the manifest.

Sankara:
Into blinding darkness pass they who are devoted to the unmanifest, and into still greater darkness, as it were, they who delight in the manifest.

Hindi Meaning:
जो अजन्म, जन्माभाव की अवस्था का अनुसरण करते हैं वे घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं। और जो केवल जन्म, प्रकृति के अन्दर जन्म में ही रत रहते हैं वे मानो उससे भी अधिक घोर अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

(ये) जो लोग परमेश्वर को छोड़कर (असम्भूतिम्) अनादि अनुत्पन्न सत्व, रज और तमोगुणमय प्रकृतिरूप जड़ वस्तु को (उपासते) उपास्यभाव से जानते हैं, वे (अन्धम्, तमः) आवरण करनेवाले अन्धकार को (प्रविशन्ति) अच्छे प्रकार प्राप्त होते और (ये) जो (सम्भूत्याम्) महत्तत्त्वादि स्वरूप से परिणाम को प्राप्त हुई सृष्टि में (रताः) रमण करते हैं (ते) वे (उ) वितर्क के साथ (ततः) उससे (भूय इव) अधिक जैसे वैसे (तमः) अविद्यारूप अन्धकार को प्राप्त होते हैं ॥

अन्यदेवाहुः संभवादन्यदाहुरसंभवात् ।

इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे ॥ १३ ॥

anyad evāhuḥ saṃbhavād anyad āhur asaṃbhavāt |
iti śuśruma dhīrāṇāṃ ye nas tad vicacakṣire || 13 ||

अन्यत्। एव। आहुः। सम्भवादिति सम्ऽभवात्। अन्यत्। आहुः। असंम्भवादित्यसंम्ऽभवात् ॥
इति। शुश्रुम। धीराणाम्। ये। नः। तत्। विचचक्षिर इति विऽचचक्षिरे ॥

सम्भवात् अन्यत् एव आहुः। असम्भवात् अन्यत् आहुः।
इति धीराणां शुश्रूम ये नः तत् विचचक्षिरे ॥

सम्भवात् - sambhavāt - comes by the Birth | अन्यत् - anyat - other | आहुः - āhuḥ - it is said | असम्भवात् - asambhavāt - comes by the Non - Birth |अन्यत् - anyat - other | एव - eva - verily | आहुः - āhuḥ - it is said | इति - iti - thus | धीराणाम् - dhīrāṇām - (from mouth of) the wise ones | शुश्रूम - śuśrūma - we have been hearing | ये - ye - those who | नः - naḥ - to us | तत् - tat - That | विचचक्षिरे - vicacakṣire - revealed to understanding |

S. Radhakrishna:
Distinct, indeed, they say, is what results from the manifest, and distinct, they say, is what results from the unmanifest. Thus, have we heard from those wise who have explained to us these.

Sankara:
Distinct, they say, is (what results) from the manifest and distinct again, they say, is (what results) from the unmanifest. Thus, have we heard from the sages who taught us that.

Hindi Meaning:
जन्म से जो प्राप्त होता है वह अन्य ही है, ऐसा ज्ञानी कहते हैं; अजन्म से जो प्राप्त होता है वह और ही है, ऐसा ज्ञानी कहते हैं; यह श्रुतिज्ञान हमने ज्ञानियों से प्राप्त किया है जिन्होंने हमारी बुद्धि के समक्ष तत् को प्रकाशित किया।

(धीराणाम्) मेधावी योगी विद्वानों से जो वचन (शुश्रुम) सुनते हैं (ये) जो वे लोग (नः) हमारे प्रति (तत्) (विचचक्षिरे) व्याख्यानपूर्वक कहते हैं, वे लोग (सम्भवात्) संयोगजन्य कार्य्य से (अन्यत्, एव) और ही कार्य्य वा फल (आहुः) कहते (असम्भवात्) उत्पन्न नहीं होनेवाले कारण से (अन्यत्) और (आहुः) कहते हैं, (इति) इस बात को सुनो ॥

संभूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा संभूत्यामृतमश्नुते ॥ १४ ॥

saṃbhūtiṃ ca vināśaṃ ca yas tad vedobhayaṃ saha |
vināśena mṛtyuṃ tīrtvā saṃbhūtyāmṛtam aśnute || 14 ||

सम्भूतिमिति सम्ऽभूतिम्। च। विनाशमिति विऽनाशम्। च। यः। तत्। वेद। उभयम्। सह ॥
विनाशेनेति विनाशेन। मृत्युम्। तीर्त्वा। सम्भूत्येति सम्ऽभूत्या। अमृतम्। अश्नुते ॥

सम्भूतिं च विनाशं च यः तत् उभयं सह वेद विनाशेन मृत्युम् तीर्त्वा सम्भूत्या अमृतम् अश्नुते ॥

सम्भूतिम् - sambhūtim - the Birth | च - ca - and | विनाशम् - vināśam - the dissolution of Birth | च - ca - and | यः - yaḥ - he who | तत् - tat - That | उभयम् - ubhayam - both | सह - saha – in one | वेद - veda - knows | विनाशेन - vināśena - by the dissolution | मृत्युम् - mṛtyum - death | तीर्त्वा - tīrtvā - having crossed beyond | सम्भूत्या - sambhutyā - by the Birth | अमृतम् - amṛtam - Immortality | अश्नुते - aśnute - enjoys |

S. Radhakrishna:

He who understands the manifest and the unmanifest both together, crosses death through the unmanifest and attains life eternal through the manifest.

Sankara:

Whoever understands the manifest and the unmanifest as going together, (he), by overcoming death through the manifest, attains immortality through the unmanifest.

Hindi Meaning:

जो तत् को इस रूप में जानता है कि वह एक साथ जन्म और जन्म का उच्छेद या अन्त दोनों है, वह जन्म के उच्छेद या अन्त से मृत्यु को पार कर जन्म से अमरता का आस्वादन करता है।

(यः) जो विद्वान् (सम्भूतिम्) जिसमें सब पदार्थ उत्पन्न होते उस कार्य्यरूप सृष्टि (च) और उसके गुण, कर्म, स्वभावों को तथा (विनाशम्) जिसमें पदार्थ नष्ट होते उस कारणरूप जगत् (च) और उसके गुण, कर्म, स्वभावों को (सह) एक साथ (उभयम्) दोनों (तत्) उन कार्य्य और कारण स्वरूपों को (वेद) जानता है, वह विद्वान् (विनाशेन) नित्यस्वरूप जाने हुए कारण के साथ (मृत्युम्) शरीर छूटने के दुःख से (तीर्त्वा) पार होकर (सम्भूत्या) शरीर, इन्द्रियाँ और अन्तःकरणरूप उत्पन्न हुई कार्यरूप धर्म में प्रवृत्त करानेवाली सृष्टि के साथ (अमृतम्) मोक्षसुख को (अश्नुते) प्राप्त होता है ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् ।

तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥ १५ ॥

hiraṇmayena pātreṇa satyasyāpihitaṃ mukham |
tat tvaṃ pūṣann apāvṛṇu satyadharmāya dṛṣṭaye || 15 ||

हिरण्मयेन। पात्रेण। सत्यस्य। अपिहितमित्यपिऽहितम्। मुखम् ॥
तत् त्वम् पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये ॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्य मुखम् अपिहितम् अस्ति।
पूषन् तत् सत्यधर्माय दृष्टये त्वम् अपावृणु ॥

हिरण्मयेन पात्रेण - hiraṇmayena pātreṇa - a brilliant golden lid | सत्यस्य - satyasya - of Truth | मुखम् - mukham - the face | अपिहितम् - apihitam - is covered | पूषन् - pūṣan - O Fosterer! | तत् - tat - that | सत्यधर्माय - satyadharmāya - for the law of the Truth | दृष्टये - dṛṣṭaye - for sight | त्वम् - tvam - do thou | अपावृणु - apāvṛṇu - remove |

S. Radhakrishna:

The face of truth is covered with a 'golden disc. Unveil it, 0 Pusan, so that I who love the truth may see it.

Sankara:

Truths face is covered with a golden lid; remove that, O Pūṣan, that I, Truth's devotee, may see It.

Hindi Meaning:

सत्य का मुख चमकीले सुनहरे ढक्कन से ढका है; हे पोषक सूर्यदेव! सत्य के विधान की उपलब्धि के लिए, साक्षात् दर्शन के लिए तू वह ढक्कन अवश्य हटा दे।

(हिरण्मयेन) ज्योतिःस्वरूप (पात्रेण) रक्षक मुझसे (सत्यस्य) अविनाशी यथार्थ कारण के (अपिहितम्) आच्छादित (मुखम्) मुख के तुल्य उत्तम अङ्ग का प्रकाश किया जाता, प्रभु! सत्य का मुख सोने के समान आवरण से ढका हुआ है, सच्चे धर्म की प्राप्ति के लिए उस आवरण को हटा दें।

(**पूषन्**) हे सब आश्रितों का भरण-पोषण करने वाले नारायण (**हिरण्मयेन**) ज्योतिर्मय (**पात्रेण**) पात्र से (**सत्यस्य**) सत्यस्वरूप आप सर्वेश्वर का (**मुखम्**) श्रीमुखारविन्द (**अपिहितम्**) ढका हुआ है (**सत्यधर्माय**) सत्य परब्रह्म के उपासक मेरे लिये (**दृष्टये**) अपना दर्शन कराने के निमित्त (**त्वम्**) तुम (**तत्**) उस श्रीमुख को (**अपावृणु**) आवरण रहित पर दो ॥

पूषन्नेकर्षे यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन्समूह ।
तेजः यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ॥ १६ ॥

pūṣann ekarṣe yama sūrya prājāpatya vyūha raśmīn samūha tejaḥ |
yat te rūpaṃ kalyāṇatamaṃ tat te paśyāmi yo'sāv asau puruṣaḥ so'ham asmi || 16 ||

पूषन् । एकर्षे । यम सूर्य प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह ।।
तेजः यत् ते रूपम् कल्याणतमम् तत् ते पश्यामि यः असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ।।

पूषन् एकर्षे यम प्राजापत्य सूर्यरश्मीन् व्यूह तेजः।
यत् ते कल्याणतमं रूपं तत् ते पश्यामि। यः असौ पुरुषः सः अहम् अस्मि ॥

पूषन् - pūṣan - O Fosterer! एकर्षे - ekarṣe - O sole Seer! | यम - yama - O Ordainer! | सूर्य - sūrya - O illumining Sun प्राजापत्य – prājāpatya- O power of the Father of creatures रश्मीन् - raśmīn - thy rays व्यूह - vyuha - marshal समूह - samūha - draw together | यत् तेजः - yat tejaḥ - the Luster which ते- te - thy कल्याणतमम्- kalyāṇatamam – most blessed रूपम् - rūpam – form तत्- tat – that ते - te - in Thee पश्यामि - paśyāmi- I behold यः असौ - yaḥ asau- there and there पुरुषः - puruṣaḥ - The Purusha | सः - saḥ - He | अहम् अस्मि - aham asmi - am I |

S. Radhakrishna:

O Pusan, the sole seer, O Controller, O Sun, offspring of Praja-pati, spread forth your rays and gather up your radiant light that I may behold you of loveliest form. Whosoever is that person (yonder) that also am I.

Sankara:

O Pūṣan, sole traveler, Yama, Sun, child of Prajāpati, recall thy rays; withdraw thy light that I may behold thee of loveliest form. Whosoever that Person is, that also am I.

Hindi Meaning:

हे पोषक, हे एकमात्र द्रष्टा, हे विधाता एवं नियन्ता, हे प्रकाशदाता सूर्य, हे प्रजापति की (प्राणियों एवं प्रजाओं के पिता की) शक्ति! अपनी किरणों को व्यूहबद्ध एवं व्यवस्थित कर, अपने प्रकाश को एकत्र एवं पुञ्जीभूत कर ले जो तेज तेरा सबसे अधिक कल्याणकारी रूप है, तेरा वही रूप मैं देखता हूं। वहां, वहां जो पुरुष है वही हूँ मैं।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम् ।

ओं । क्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर कृतं स्मर ॥ १७ ॥

vāyur anilam amṛtam athedaṃ bhasmāntaṃ śarīram |
oṃ krato smara kṛtaṃ smara krato smara kṛtaṃ smara || 17 ||
वा॒युः। अनि॑लम्। अ॒मृत॑म्। अथ॑। इ॒दम्। भस्मा॑न्त॒मिति॒ भस्म॑ऽअन्तम्। शरी॑रम् ॥
ओ३म्। क्रतो॒ इति॒ क्रतो॑। स्म॒र॒। क्लि॒बे॒। स्म॒र॒। कृ॒तम्। स्म॒र॒ ॥

अथ वायुः अमृतम् अनिलम्। इदम् शरीरं भस्मान्तं भूयात् । ओं क्रतो कृतं स्मर ॥

वायुः - vāyuḥ - the Breath of things | अमृतम् - amṛtam - an immortal | अनिलम् - anilam - Life | अथ - atha - but | इदम् शरीरम् - idam śarīram - this body | भस्मान्तम् - bhasmāntam - ending in ashes | ओम् - om - OM! | क्रतो - krato - O Will | कृतम् - kṛtam - that which was done | स्मर - smara - remember | ओम् - om - OM! | क्रतो - krato - O Will | कृतम् - kṛtam - that which was done | स्मर - smara - remember |

S. Radhakrishna:

May this life enter into the immortal breath; then may this body end in ashes. O Intelligence, remember, remember what has been done. Remember, O Intelligence, what has been done. Remember:

Sankara:

(May) this life (merge in) the immortal breath! And (may) this body end in ashes! Om! mind, remember, remember thy deeds; mind, remember, remember thy deeds!

Hindi Meaning:

वस्तुओं का प्राण, वायु, अमर जीवनतत्त्व है, परन्तु इस का अन्त है भस्म। ओ३म। हे दिव्य संकल्पशक्ति! स्मरण कर, जो किया था उसे स्मरण कर! हे दिव्य संकल्पशक्ति, स्मरण कर, किये हुए कर्म का स्मरण कर।

(क्रतो) कर्म करनेवाले जीव ! तू शरीर छूटते समय (ओ३म्) इस नामवाच्य ईश्वर को (स्मर) स्मरण कर (क्लिबे) अपने सामर्थ्य के लिये परमात्मा और अपने स्वरूप का (स्मर) स्मरण कर (कृतम्) अपने किये का (स्मर) स्मरण कर। इस संस्कार का (वायुः) धनञ्जयादिरूप वायु (अनिलम्) कारणरूप वायु को, कारणरूप वायु (अमृतम्) अविनाशी कारण को धारण करता (अथ) इसके अनन्तर (इदम्) यह (शरीरम्) नष्ट होनेवाला सुखादि का आश्रय शरीर (भस्मान्तम्) अन्त में भस्म होनेवाला होता है॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥ १८ ॥

agne naya supathā rāye asmān viśvāni deva vayunāni vidvān |
yuyodhy asmaj juhurāṇam eno bhūyiṣṭhāṃ te nama uktiṃ vidhema || 18 ||

अग्ने॑। नय॑। सुपथेति॑ सुऽपथा॑। रा॒ये। अ॒स्मान्। विश्वा॑नि। दे॒व॒। व॒युना॑नि। वि॒द्वान् ॥
युयो॒धि। अ॒स्मत्। जु॒हु॒रा॒णम्। एनः॑। भूयि॑ष्ठाम्। ते॒। नमः॑ऽउक्ति॒मिति॒ नमः॑ऽउक्तिम्। वि॒धे॒म॒ ॥

agne—O my Lord, as powerful as fire; naya—kindly lead; supathā—by the right path; rāye—for reaching You; asmān—us; viśvāni—all; deva—O my Lord; vayunāni—actions; vidvān—the knower; yuyodhi—kindly remove; asmat—from us; juhurāṇam—all hindrances on the path; enaḥ—all vices; bhūyiṣṭhām—most numerous; te—unto You; namaḥ uktim—words of obeisance; vidhema—I do.

देव अग्ने - deva agne - O god Agni! | विश्वानि वयुनानि - viśvāni vayunāni - all things that are manifested | विद्वान् - vidvān - knowing | अस्मान् - asmān - us | राये - rāye - to the felicity | सुपथा - supathā - by the good path | नय - naya - lead | अस्मत् - asmat - from us | जुहुराणाम् एनः - juhurāṇām enaḥ - the devious attraction of sin | युयोधि - yuyodhi - remove | ते - te - to thee | भूयिष्ठाम् - bhūyiṣṭhām - completest | नम उक्तिम् - nama uktim - speech of submission | विधेम - vidhema - we would dispose |

S. Radhakrishna:

O Agni, lead us, along the auspicious path to prosperity, O God, who knowest all ours. deeds. Take away from us deceitful sins. We shall offer many prayers unto thee.

Sankara:

O God Agni, lead us on to prosperity by a good path, judging all our deeds. Take away ugly sin from us. We shall say many prayers unto thee.

Hindi Meaning:

सब व्यक्त वस्तुओं के जानने वाले हे अग्निदेव! हमे सुपथ से, उत्तम मार्ग से आनन्द की ओर ले चल; पाप का कुटिलतापूर्ण आकर्षण हमसे हटा दे, दूर कर दे। तेरे प्रति अन्तर्नमन (समर्पण) की सर्वाङ्गपूर्ण वाणी (स्तोत्र) हम निवेदित करें।

(देव) दिव्यरूप (अग्ने) प्रकाशस्वरूप करुणामय जगदीश्वर ! जिस से हम लोग (ते) आपके लिये (भूयिष्ठाम्) अधिकतर (नमउक्तिम्) सत्कारपूर्वक प्रशंसा का (विधेम) सेवन करें, इससे (विद्वान्) सबको जाननेवाले आप (अस्मत्) हम लोगों से (जुहुराणम्) कुटिलतारूप (एनः) पापाचरण को (युयोधि) पृथक् कीजिये, (अस्मान्) हम जीवों को (राये) विज्ञान, धन वा धन से हुए सुख के लिये (सुपथा) धर्मानुकूल मार्ग से (विश्वानि) समस्त (वयुनानि) प्रशस्त ज्ञानों को (नय) प्राप्त कराइये ॥

THE END